REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

दक्षिणी हरियाणा में सामाजिक–आर्थिक विकास स्तर – एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. दीपक कुमार
एसिसटेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज रेवाड़ी (हरि.)

परिचय :–

अध्ययन क्षेत्र में दक्षिणी हरियाणा के महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, गुडगांव तथा फरीदाबाद जिलों को सम्मलित किया गया है। दक्षिणी हरियाणा के ये जिले 27^0 30′ उत्तरी अक्षांश से $28^0$30′ उत्तरी अक्षांश तथा $75^0$30′ पूर्वी देशांतर से $77^0$30′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। दक्षिणी हरियाणा का कुल क्षेत्रफल 8358 वर्ग किलोमीटर है। हरियाणा राज्य 1 नवम्बर 1966 को अस्तित्व में आया। हरियाण राज्य के गठन के समय इसमें 7 जिले जिसमें अम्बाला, करनाल, रोहतक,

गुड़गाँव, महेन्द्रगढ़, हिसार एवं जींद सम्मिलित थे। तब से अब तक 13 और जिले बनाये गए है। 1972 को भिवानी तथा सोनीपत जिलों का गठन किया गया। 23 जनवरी 1973 को हिसार जिले का उत्तरी पश्चिमी भाग अलग किया गया। 1 नवम्बर 1989 को हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में कैथल, रेवाड़ी, यमुनानगर तथा पानीपत जिले बनाए गए। 15 अगस्त 1995 को अम्बाला से पंचकुला को अलग कर नया जिला बनाया गया। 2 अक्टुबर 2004 को मेवात जिला बना। इस प्रकार वर्तमान हरियाणा में 20 जिले है। चण्डीगढ़ पंजाब तथा हरियाणा की सांझी राजधानी होने के साथ–साथ केन्द्र शासित प्रदेश भी है।

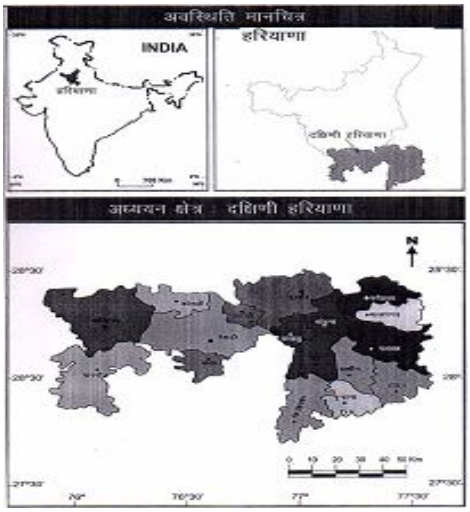

सामाजिक आर्थिक प्रदेश का स्तर

1. विकसीत सामाजिक आर्थिक प्रदेश

इसके अन्तर्गत दक्षिणी हरियाणा की फरीदाबाद व गुड़गाँव तहसीलों को सम्मिलित किया गया है इन तहसीलों का सामूहिक सूचकांक क्रमशः 19.77, 22.26 है। इन तहसीलों में जनसंख्या घनत्व, पम्प सेट्स, ट्रैक्टरों की संख्या, उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग सबसे अधिक होने से यह तहसील अधिक विकसीत है। स्कूलों की संख्या इन तहसीलों में कम पायी जाती है। कृषि कार्यो में लगी जनसंख्या का अनुपात बहुत कम प्रतिशत में पाया जाता है जो इस बात का सूचक है कि इन तहसीलों में द्वितीयक व तृतीयक व्यवसायों में अधिक जनसंख्या लगी हुई है।

प्रतिदर्श सर्वेक्षण के लिए इन तहसीलों में से दो ग्रामों धोझ व सुखराली का चयन करके प्रत्येक ग्राम से 20–20 परिवारों का चयन किया गया है। प्रतिदर्श परिवारों की कुल जनसंख्या 320 है जिसमें 170 पुरुष व 150 स्त्रियां है। अर्थात् 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या 882 है साक्षरता प्रतिशत 82.97 है, जिसमें पुरुष साक्षरता प्रतिशत 85.29 तथा स्त्री सारक्षरता 80.66 प्रतिशत है। व्यावसायिक सरंचना की दृष्टि से 15.62 प्रतिशत कृषक एवं 8.44 प्रतिशत कृषि श्रमिक है अर्थात कुल कार्यशील जनसंख्या का 24. 06 प्रतिशत कृषि श्रमिक है अर्थात कुल कार्यशील जनसंख्या का 24.06 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। 7.18 प्रतिशत जनसंख्या पशुपालन में है जिसमें स्त्रियों का अनुपात अधिक है। 52.5 प्रतिशत जनसंख्या नौकरीपेशा एवं 3.12 प्रतिशत गृह कार्य में सलंग्न है। 13.12 प्रतिशत जनसंख्या अन्य कार्यो में लगी हुई है।

फसल प्रतिरुप

प्रतिदर्श परिवारों में कृषि योग्य भूमि में रबी व खरीफ की फसलें बोई जाती है 40 प्रतिदर्श परिवारों के पास 324 हेक्टेयर योग्य भूमि है। प्रतिदर्श तहसीलों के परिवारों में कुल कृषि योग्य भूमि के 54.94 प्रतिशत पर गेहूँ, 8.02 प्रतिशत पर चना, 9.88 प्रतिशत पर जौ, 16.67 प्रतिशत पर सरसों तथा 10.49 प्रतिशत पर सब्जियां उगायी जाती है जबकि खरीफ फसलों में 10.80 प्रतिशत पर कपास, 53.09 प्रतिशत पर चावल, 17.29 प्रतिशत पर गन्ना, 7.40 प्रतिशत बाजरा, 6.79 प्रतिशत पर ग्वार व 9.62 प्रतिशत पर दालों की कृषि की जाती है। फसल प्रतिरुप को निम्न तालिका (1) से समझा जा सकता है।

तालिका 1
फसल प्रतिरुप

रबी फसल	भूमिजोत (हेक्टेयर में)	प्रतिशत में	खरीफ फसल	भूमिजोत (हेक्टेयर में)	प्रतिशत में
गेहूँ	178	54.94	**कपास**	35	10.80
चना	26	8.02	**चावल**	172	53.09
जौ	32	9.88	**गन्ना**	56	17.29
सरसों	54	16.67	**बाजरा**	24	7.40
सब्जियां	34	10.49	**ग्वार**	22	6.79
–	–	–	**दालें**	15	9.63
कुल	**324**	**100.00**	**कुल**	**324**	**100.00**

2. कृषि यन्त्र एव औजार

दक्षिणी हरियाणा की गुड़गाँव व फरीदाबाद तहसीलों के अन्तर्गत चुने गऐ ग्राम के 40 प्रतिदर्श परिवारों में से 90 प्रतिशत परिवारों के पास विद्युत पंप है, 77.50 परिवारों के पास टैक्टर है। ट्रैक्टरों की संख्या बडें परिवारों के पास पायी गईं। (तालिका 2)

तालिक 2
कृषि यन्त्र एवं औजार

कृषि यन्त्र	परिवारों की संख्या	परिवारों का प्रतिशत
विद्यतु पंप	36	90
ट्रैक्टर	31	77.50
थ्रेसर	37	92.50
गन्ना क्रुसर	06	15.00

92.50 प्रतिशत परिवारों के पास थ्रेसर, 15.00 प्रतिशत के पास गन्ना क्रुशर है। छोटी जोत वाले परिवारों के पास कृषि यन्त्रों का विशेषतया अभाव पाया जाता है।

3. आधुनिक आदानों का प्रयोग

40 प्रतिशत परिवारों में से 95 प्रतिशत परिवार उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करते है जिससे की फसल प्रति हेक्टेयर उत्पादन अधिक हो सके। 97.5 प्रतिशत परिवार कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करते है। जबकि 90 प्रतिशत परिवार रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते है प्रतिदर्श परिवारों ने विभिन्न सहकारी बैंको से ऋण सुविधा भी प्राप्त की हुई है। अधिकांश परिवार कृषि उत्पादन को कृषि उपज मण्डियों में विक्रय कर देते है।

4. पशुपालन

प्रतिदर्श कुल 40 परिवारों में से 52.5 प्रतिशत परिवार गाय/बैल, 95.0 प्रतिशत भैसें, 5 प्रतिशत बकरियां, 5 प्रतिशत परिवार ऊँट तथा 7.5 प्रतिशत परिवार अन्य पशुओं जैसे, कुत्ते, बिल्ली आदि को पालते है, इन तहसीलों के गाँवों में सिंचाई साधन अधिक होने से पशुओं के लिए पर्याप्त चारा उपलबध हो जाता है इसलिए इन तहसीलों में भैंसे व गाय/ बैल अधिक पाले जाते है।(तालिका संख्या 3)

तालिका संख्या 3
प्रतिदर्श परिवारों के पशुओं की संख्या व प्रतिशत

पशु	परिवारों की संख्या	परिवारों का प्रतिशत प्रतिशत
गाय/बैल	21	52.5
भैंस	38	95.0
बकरिया	02	5
भेडें	02	5
ऊटँ	01	2.5
अन्य	03	7.5

5. सामाजिक स्तर

विकसित सामाजिक–आर्थिक प्रदेश में प्रतिदर्शी परिवारों का सामाजिक स्तर भी ऊचां पाया गया है। कुल 40 प्रतिदर्शी परिवारों में से 97.5 प्रतिशत परिवारों के पास विद्युत सुविधा उपलब्ध है। 90 प्रतिशत परिवारों के पास मोटर साइकिल है, 80 प्रतिशत परिवारों के पास कम्प्यूटर है। 62.5 प्रतिशत के पास टेलीविजन, 72.5 प्रतिशत के पास रेड़ियों सुविधा है 77.5 प्रतिशत के पास टेप रिकार्डर की सुविधा उपलब्ध है। प्रतिदर्श 85 प्रतिशत परिवार समाचार पढने के लिए पत्र–पत्रिकाओं का प्रयोग करते है। शत प्रतिशत परिवारों के मकान पक्के है तथा शत प्रतिशत परिवार ही जातिय विवाह करते है। उच्च शिक्षा प्राप्त एवं उच्च विचारों वाले कुछ प्रतिशत व्यक्तियों ने अन्तर्जातीय विवाह के बारे में भी विचार व्यक्त किये है। (तालिका संख्या 4)

तालिका संख्या 4 (सामाजिक स्तर)

साधन	संख्या	प्रतिशत
कप्यूटर	32	80.0
मोटर साइकिल	36	90.0
विद्युत	39	97.5
टेलीविजन	25	62.5
रेडियो	29	72.5
टेपरिकार्डर	31	77.5
पत्र–पत्रिकाए	34	85.0
पक्के मकान	38	100.0
जातिय विवाह	40	100

2. मध्यम विकसीत सामाजिक–आर्थिक प्रदेश

दक्षिणी हरियाणा की वल्लभगढ़, पलवल तथा होडल तहसीलों को मध्यम विकसीत सामाजिक–आर्थिक विकास के अन्तर्गत शामिल किया गया है। इन तहसीलों का सामूहिक सूचंकाक 18.07, 17.67, 16.88 है। यह तहसीलें माध्यमिक व हाई स्कूलों, डाकघरों, ट्रैक्टरों एव पम्प सेट्स में मध्य विकसीत के अन्तर्गत आती है। होस्पीटलों एवं साक्षरता दर में ये तहसीलें पिछडी हुई है। इन तहसीलों में प्रतिदर्श अध्ययन के लिए 3 गावों के 20–20 घरों का चयन किया गया। प्रतिदर्श परिवारों की कुल जनसंख्या 360 है जिसमें 192 पुरुष व 168 स्त्रिया है प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्री पुरुष अनुपात 875 है कुल जनसंख्या पर साक्षरता 81.11 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 83.85 तथा स्त्री साक्षरता 77.97 प्रतिशत है। व्यावसायिक सरंचना के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 18.33 प्रतिशत कृषक एवं 14.16 प्रतिशत कृषि श्रमिक है अर्थात कुल कार्यशील जनसंख्या की 32.49 जनसंख्या कृषि कार्य में सलंग्न है, 15.27 प्रतिशत जनसंख्या पशुपालन में, 31.11 प्रतिशत नौकरीपेशा, 7.22 प्रतिशत गृहकार्य तथा 13.88 प्रतिशत जनसंख्या अन्य कार्यो में लगी हुई है। मध्य विकसीत सामाजिक–आर्थिक विकास में नौकरी–पेशा का प्रतिशत सर्वाधिक है।

2. फसल प्रतिरुप

सर्वेक्षित 60 परिवारों के आँकड़ों के आधार पर फसल प्रतिरुप अलग–अलग भागों में भिन्न–भिन्न पाया जाता है। फसलों को दो भागों खरीफ व रबी में बांटा गया है। निम्न तालिका से फसल प्रतिरुप का स्पष्ट वर्णन मिलता है।

तालिका 5
फसल प्रतिरुप

रबी फसल	भूमिजोत (हेक्टेयर में)	प्रतिशत में	खरीफ फसल	भूमिजोत (हेक्टेयर में)	प्रतिशत में
गेहूँ	108	44.45	**कपास**	52	21.40
चना	31	12.76	**चावल**	76	31.27

सरसों	42	17.28	**बाजरा**	45	18.52
सब्जियां	40	16.46	**ग्वार**	46	18.93
–	–	–	**दालें**	24	9.88
कुल	**243**	**100.00**	**कुल**	**243**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि रबी फसलों में कुल बोये गये क्षेत्र के 44.45 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूँ, 12.76 प्रतिशत पर चना, 9.05 प्रतिशत पर जौ, 17.28 प्रतिशत पर सरसों तथा 16.46 प्रतिशत क्षेत्र पर सब्जियां बोयी जाती है। रबी फसलों में बोयी गई सभी फसलों में गेहूँ का प्रतिशत सर्वाधिक पाया जाता है। खरीफ फसलों के अन्तर्गत कुल बोये गये क्षेत्र के 21.40 प्रतिशत क्षेत्र में कपास, 31.27 प्रतिशत क्षेत्र में चावल, 18.52 प्रतिशत क्षेत्र में बाजरा, 18.93 प्रतिशत क्षेत्र में ग्वार तथा 9.88 प्रतिशत क्षेत्र में दालें उगायी जाती है। दक्षिणी हरियाणा की इन तहसीलों में खरीफ की फसल के अन्तर्ग चावल सर्वाधिक मात्रा में उगाया जाता है।

2. कृषि यन्त्र एवं औजार

दक्षिणी हरियाणा की बल्लभगढ़, पलवल व होडल तहसीलों के अन्तर्गत चुने गऐ 60 प्रतिदर्श परिवारों में से 86.66 प्रतिशत परिवारों के पास विद्यतु पम्प, 55.00 प्रतिशत परिवारों के पास ट्रैक्टर, 81.66 प्रतिशत के पास थ्रेसर तथा 13.33 प्रतिशत परिवारों के पास गन्ना क्रुशर है। प्रतिदर्श सर्वेक्षण के दौरान पता चला कि कुछ किसानों के पास ट्रैक्टर न होते हुए भी थ्रेसर है जो डीजल इंजन से चलाए जाते है। कृषि यन्त्र एवं औजारों की दृष्टि से छोटी जोत वाले किसान पिछडे हुए है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण कुछ किसानों की स्थिति काफी दयनीय बनी हुई है।

तालिक 6
कृषि यन्त्र एवं औजार

कृषि यन्त्र	परिवारों की संख्या	परिवारों का प्रतिशत
विद्युत पंप	52	86.66
ट्रैक्टर	33	55.00
थ्रेसर	49	81.66
गन्ना क्रुसर	08	13.33

3. आधुनिक आदानों का प्रयोग

दक्षिणी हरियाणा में प्रतिदर्श परिवारों में से 94.37 प्रतिशत परिवार उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करते है। 93.75 परिवार उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करते है, 93.75 प्रतिशत परिवार कीटनाशक दवाओं तथा 95.00 प्रतिशत परिवार रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते है। लगभग 20 प्रतिशत कृषकों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कुएं, बैल, ऊँट, भैसं, आदि खरीदने के लिए सरकार द्वारा ऋण सुविधा प्राप्त है। सिंचित क्षेत्र अधिक होने से कृषि उत्पादन अधिक है। कृषि उपज मण्डियों की संख्या भी अधिक पायी गईं। अतः प्रतिदर्श परिवारों में 86.10 प्रतिशत परिवार अपना कृषि उत्पादन कृषि उपज मण्डियों के माध्यम से बेचते है। केवल 10.52 प्रतिशत कृषक ही अपनी उपज डीलर के माध्यम से बेचते है।

4. पशुपालन

प्रतिदर्श परिवारों में कुल 40 पशु है कुल 60 प्रतिदर्श परिवारों में से 48.33 प्रतिशत परिवारों के पास गाय/बैल, 88.33 प्रतिशत के पास भैसें, 5 प्रतिशत के पास बकरिया, 5 प्रतिशत के पास भेड तथा 3.33 प्रतिशत परिवारों के पास ऊँट है। प्रतिदर्श आकडों के आधार पर ज्ञात होता है कि दक्षिणी हरियाणा में दुग्ध देने वाली भैसों की संख्या अन्य पशुओं से अधिक पायी जाती है। ऊँटों का प्रतिशत सबसे कम पाया जाता है इसका प्रमुख कारण अधिकांश खेती आधुनिक तकनीकी यन्त्रों एवं ट्रैक्टरों से कर ली जाती है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर किसान ही ऊँटों या बैलों से खेती करते है।

5. सामाजिक स्तर

दक्षिणी हरियाणा के पूर्वी भागों में स्थित वल्लभगढ, पलवल व होडल तहसीलों के प्रतिदर्श परिवारों का सामाजिक स्तर मध्यम प्रकार का मिलता है। कुल प्रतिदर्श परिवारों में से 96.66 प्रतिशत परिवारों के पास विद्युत सुविधा उपलब्ध है। 93.33 प्रतिशत के पास मोटर साइकिल सुविधा है दक्षिणी हरियाणा के सभी गाँव सडकों के माध्यम से एक दूसरे से जुडे हुऐ है। मोटर साइकिल लगभग प्रत्येक घर में मिल जाऐगी।

तालिका संख्या 7
सामाजिक स्तर

सामाजिक सुविधा	संख्या	प्रतिशत
कप्यूटर	45	75.00

मोटर साइकिल	56	93.33
विद्युत	56	96.60
टेलीविजन	48	80.00
रेडियो	42	70.00
टेपरिकार्डर	57	95.00
पत्र–पत्रिकाए	56	93.33
पक्के मकान	57	95.00
जातिय विवाह	60	100.00

75.00 प्रतिशत परिवारों के पास कम्प्यूटर, 80 प्रतिशत के पास टेलीविजन, 70.00 प्रतिशत के पास रेडियो, 95.00 प्रतिशत के पास टेपरिकार्डर, 93.33 प्रतिशत व्यक्ति पत्र–पत्रिकाएं पढते है। 95 प्रतिशत परिवारों के पास पक्के मकान व शत प्रतिशत परिवार अपनी ही जाति के युवक/युवतियों से विवाह करते है। कुछ व्यक्ति अन्तरजातिय विवाह को अपनाने के भी इच्छुक है इन तहसीलों में सामाजिक स्तर उच्च पाया जाता है।

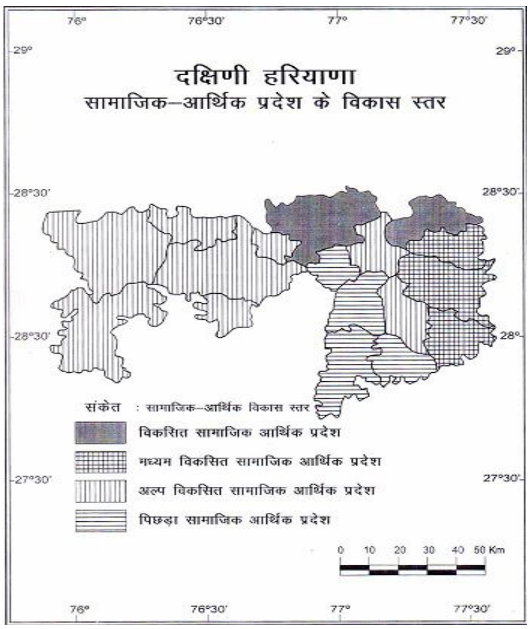

3. अल्प विकसित सामाजिक आर्थिक प्रदेश

अल्प विकसित सामाजिक–आर्थिक प्रदेश में 8 तहसीलों के 16 गावों को सम्मिलित किया गया है। इन तहसीलों का सामाजिक सूचंकाक 13 से 16 के मध्य है लगभग समस्त क्षेत्रों में यह प्रदेश काफी पिछडा हुआ है। इस प्रदेश में स्कूलों की संख्या, साक्षरता दर अधिक पायी जाती है जबकि अस्पतालों की संख्या, ट्रैक्टरों का प्रतिशत, पम्प सेट्स की संख्या कम है। इन तहसीलों में बालु मिट्टी की प्रधानता के कारण कृषि के लिए पानी की कमी है। अधिकांश परिवार नलकुपों व कुओं द्वारा सिंचाई कर खेती करते है। किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण यह तहसीलें अल्प विकसीत है। दक्षिणी हरियाणा की महेन्द्रगढ़, नारनोल, रेवाड़ी, बावल, कोसली, सोहना, पटोदी, हथीन तहसीलों में सामाजिक सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। प्रतिदर्श सर्वेक्षण के लिए 8 गावों का चयन करके 160 घरों का सर्वेक्षण किया गया। प्रतिदर्श परिवारों की कुल जनसंख्या 640 है जिसमें 322 पुरुष व 318 स्त्रियां है अर्थात 1000 पुरुषों पर 987 स्त्रियां है। इस प्रदेश में साक्षरता का प्रतिशत 82.03 है जिसमें पुरुष साक्षरता 84.78 तथा स्त्री साक्षरता 73.24 प्रतिशत है।

व्यावसायिक सरंचना की दृष्टि से कुल कार्यशील जनसंख्या के 34.06 प्रतिशत कृषक, 25.78 प्रतिशत कृषि श्रमिक है। प्रतिदर्श परिवारों में 59.84 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यो में लगी हुई है। निम्न तालिका (8) से व्यावसायिक सरंचना स्पष्ट हो जाती है:–

तालिका 8
प्रतिदर्श परिवारों में व्यावसायिक सरंचना

कृषक		**कृषि श्रमिक**		**पशुपालन**		**नौकरीपेशा**		**गृह कार्य**		**अन्य**	
पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.	पु.	स्त्री.
20	98	75	90	52	64	43	22	26	34	6	10
34.06%		25.78%		18.13%		10.15%		9.37%		2.6%	

प्रतिदर्श परिवारों में 18.13 प्रतिशत जनसंख्या पशुपालन में, 10.15 प्रतिशत जनसंख्या नौकरी पेशा, 9.37 प्रतिशत गृहकार्य में तथा 2.6 प्रतिशत जनसंख्या अन्य कार्यो में लगी हुई है दक्षिणी हरियाणा की इन तहसीलों में कृषि कार्यो में लगी जनसंख्या का अनुपात सर्वाधिक है।

फसल प्रतिरुप

प्रतिदर्श परिवारों के पासं 300 हेक्टेयर कृषि भूमि है इस भूमि पर रबी व खरीफ मौसम की फसलें बोई जाती है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है।

तालिका 9
अल्प विकसीत फसल प्रतिरुप

रबी फसल	भूमिजोत (हेक्टेयर में)	प्रतिशत में	खरीफ फसल	भूमिजोत (हेक्टेयर में)	प्रतिशत में
गेहूँ	72	24.80	**कपास**	45	15.00
चना	68	22.69	**चावल**	–	–
जौ	60	20.00	**बाजरा**	175	58.34
सरसों	52	17.33	**ग्वार**	60	20.00
सब्जियां	48	16.00	**दालें**	20	06.66
कुल	**300**	**100.00**	**कुल**	**300**	**100.00**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि में कुल बोये गये क्षेत्र के 24.80 प्रतिशत क्षेत्र पर गेहूँ, 22.69 प्रतिशत रबी फसलों में चना, 20 प्रतिशत पर जौ, 17.33 प्रतिशत पर सरसों तथा 16.00 प्रतिशत क्षेत्र में सब्जियां उगायी जाती है। रबी फसलों के अन्तर्गत गेहूँ फसल का प्रतिशत प्रति हेक्टेयर अधिक पाया जाता है। खरीफ फसलों के अन्तर्गत कुल बोये गये क्षेत्र में 15.00 प्रतिशत क्षेत्र में कपास, 58.34 प्रतिशत पर बाजरा, 20 प्रतिशत पर ग्वार तथा 6.66 प्रतिशत में दाल उगायी जाती है। खरीफ फसल के अन्तर्गत बाजरा फसल का प्रतिशत सर्वाधिक पाया जाता है। दक्षिणी हरियाणा की इन तहसीलों में रेतीली मिट्टी अधिक होने की वजह से बाजरे की फसल कम पानी में भी हो जाती हैं

कृषि यन्त्र एवं औजार

कृषि यन्त्र एवं औजारों की दृष्टि से यह प्रदेश काफी पिछडा हुआ है। 160 प्रतिदर्श परिवारों में से 82.50 प्रतिदर्श परिवार विद्युत पंप का प्रयोग करते है। 55.62 प्रतिशत परिवार के पास ट्रैक्टर, 73.75 प्रतिशत परिवारों के पास थ्रेसर तथा 8.12 प्रतिशत परिवारों के पास गन्ना क्रुसर है। दक्षिणी हरियाणा में किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर है जिससे यहाँ पर किसान आधुनिक यन्त्रों एवं औजार का प्रयोग कम कर पाते है।

आधुनिक आदानों का प्रयोग

प्रतिदश 160 परिवारों में से 95 प्रतिशत किसान उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करते है, 96.66 प्रतिशत कीटनाशक दवाओं का, 93.33 प्रतिशत कृषक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते है। इस प्रदेश में सडकों की अच्छी व्यवस्था होने से कृषि उपज मण्डियां अधिक दूर नहीं होती इसलिए किसान आसानी से अपनी फसलों को मण्डियों में बेच देते है। आधुनिक यन्त्रों के लिए किसानों को विभिन्न सहकारी समितियों व बैंकों के माध्यम से ऋण मिला हुआ है।

पशुपालन

दक्षिण हरियाणा के लगभग सभी कृषक कुछ न कुछ पशु पालते है। जीविकोपार्जन हेतु पशुपालन भी कृषि के साथ सह–व्यवसाय के रुप में करते है। तालिका (6.11) से स्पष्ट है कि प्रतिदर्श परिवारों में 61.25 प्रतिशत गाय/बैल, 58.75 प्रतिशत भैंस/भैंसे, 5.62 प्रतिशत बकरियाँ, 5 प्रतिशत भेडें तथा 5.03 प्रतिशत ऊँट पाले जाते है।

तालिका संख्या 10 (प्रतिदर्श परिवारों में पशुधन)

पशु	परिवारों की संख्या	परिवारों का प्रतिशत
गाय/बैल	98	61.25
भैंसे	94	58.75
बकरियाँ	9	5.62
ऊँट	9	5.03
भेडें	8	5

गाय/बैलों का प्रतिशत सर्वाधिक है जबकि भेडों को प्रतिशत सबसे कम (5 प्रतिशत) ही पाया जाता है।

सामाजिक स्तर

सामाजिक स्तर की दृष्टि से यह एक अल्प विकसित प्रदेश है। सामाजिक स्तर को निम्न तालिका से समझा जा सकता है।

तालिका संख्या 11

साधन	संख्या	प्रतिशत
कम्प्यूटर	81	50.63
मोटर साइकिल	111	69.37
विद्युत	158	98.75
टेलीविजन	141	88.12
रेडियो	153	95.62
टेपरिकार्डर	146	91.25
पत्र–पत्रिकाए	148	92.5
पक्के मकान	152	97.5
कच्चे मकान	6	3.75
जातिय विवाह	160	100.00

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है प्रतिदर्श 160 परिवारों में से 50.63 प्रतिशत परिवारों के पास कम्प्यूटर सुविधा, 69.37 प्रतिशत परिवारों के पास मोटरसाइकिल, 98.75 प्रतिशत के पास विद्युत, 88.12 प्रतिशत के पास टेलीविजन, 95.62 प्रतिशत के पास रेडियो, 91.25 प्रतिशत के पास टेपरिकार्डर, 92.5 प्रतिशत के पास पत्र–पत्रिकाओं की सुविधा है। 97.5 प्रतिशत परिवारों के पास पक्के मकान, 3.75 प्रतिशत परिवारों के पास कच्चे मकान तथा शत–प्रतिशत परिवार जातिय–विवाह ही करते है। प्रतिदर्श परिवारों के सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि अधिकांश परिवार एकल है जबकि बुजुर्ग व्यक्ति अब भी सयुंक्त परिवार को बनाये रखने में विश्वास करते है।

पिछड़ा हुआ सामाजिक–आर्थिक प्रदेश

इन प्रदेश में चार तहसीलों (नूँह, ताऊडु, फिरोजपुर झिरका तथा पुन्हाना) को सम्मिलित किया गया है। ये तहसीलें सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से पिछडी हुई है इसका सामूहिक सूचकांक 13 से कम है। इन तहसीलों के पिछडे होने का प्रमुख कारण कृषि उपज में उन्नत किस्म के बीजों का कम प्रयोग, ट्रैक्टरों की संख्या कम होना, उर्वरकों का कम उपयोग, अच्छे रोड तथा साक्षरता का कम होना है। शिक्षा का स्तर काफी नीचे है जिसमें यह प्रदेश सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से सबसे निम्न स्तर रखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. शर्मा बी. एल., (1983), कृषि भूगोल साहित्य भवन, आगरा, पृ. 133–134।
2. कुण्डु ए. (1972), कन्स्ट्रक्शन ऑफ कम्पोजिट इन्डीसेज फॉर रिजलाइजेशन इन्क्वाइरी इन टू दी मेथड्स ऑफ इनालेलिस,ज्योग्राफीकल रिव्यु ऑफ इण्डिया, वो 37, नवम्बर 1 मार्च 1975, पृ. 19–28।
3. Ray B. (2001) Socio Economic development in India. (Vol. 1&2). Mohit Publication New Delhi.
4. Singh. M. & Kaur. H (2004) Economic development in Haryana Deep & Deep Publications Pvt. Ltd. New Delhi.
5. Cleveland, Harlan & Jacobs, Garry - The Genetic code of social development in human choice, world academy of art of science, USA 1919

डॉ. दीपक कुमार
एसिसटेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, अहीर कॉलेज रेवाड़ी (हरि.)